NAAC
Accredited University

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

परिसर प्रतिध्वनि

(नवोन्मेष, युवा ऊर्जा एवं अन्तःक्रिया का अभिव्यक्ति मंच)

मासिक भित्ति पत्रिका, अंक - 08, अगस्त 2025

प्रधान संरक्षक	-	श्रीमती मीनाक्षी सुराना
प्रमुख संरक्षक	-	डॉ. प्रेम सुराना
मुख्य संरक्षक	-	डॉ. अंशु सुराना
प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर)	-	प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन
वरिष्ठ सलहकार	-	प्रो. (डॉ.) अरविन्द कुमार अग्रवाल
प्रधान संपादक	-	प्रो. (डॉ.) अंकित गांधी
संपादक	-	प्रो. (डॉ.) रीटा बिष्ट, प्रो. (डॉ.) मोनिका शर्मा
कार्यकारी संपादक	-	डॉ. प्रेम कुमार
सह-संपादक	-	डॉ. भाग्यश्री खरे
खेल संपादक	-	श्री यश यादव
विद्यार्थी संपादक	-	किरण चौधरी

प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर) महोदया का संदेश ...

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारी भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' का आठवाँ अंक प्रकाशित हो रहा है। यह पत्रिका न केवल विश्वविद्यालय के बौद्धिक और सांस्कृतिक वातावरण की झलक प्रस्तुत करती है, बल्कि हमारे विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक अभिव्यक्तियों को भी एक सशक्त मंच प्रदान करती है। शिक्षण संस्थान केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं होते, वे विचारों के आदान-प्रदान, रचनात्मकता और नवाचार के केंद्र होते हैं। परिसर प्रतिध्वनि इसी विचारधारा का प्रतिबिंब है, जो परिसर की सकारात्मक ऊर्जा, गतिविधियों और उपलब्धियों को समाज के समक्ष लाने का कार्य करती है। मैं पत्रिका की संपूर्ण संपादकीय टीम, सहयोगी सदस्यों, रचनाकारों तथा इस अंक के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी प्रतिभागियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ। आशा है कि यह अंक भी पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक सिद्ध होगा। विश्वविद्यालय परिवार की निरंतर प्रगति और समृद्धि हेतु मेरी शुभकामनाएँ सदैव आपके साथ हैं।

प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन
प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर)
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

वरिष्ठ सलाहकार महोदय की कलम से...

प्रिय पाठकों,

'परिसर प्रतिध्वनि' के आठवें अंक के प्रकाशन पर मैं सम्पूर्ण संपादकीय टीम को हृदय से बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका न केवल हमारे शैक्षणिक परिसर की रचनात्मक गतिविधियों की जीवंत अभिव्यक्ति है, अपितु विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं शोधार्थियों की सृजनात्मकता को मंच प्रदान करने वाला प्रेरक माध्यम भी है। हर अंक के साथ यह पत्रिका नई ऊँचाइयों को छू रही है, जो यह दर्शाता है कि हमारे संस्थान में चिंतन, अभिव्यक्ति और नवाचार की निरंतर धारा प्रवाहित हो रही है। साहित्य, कला, संस्कृति और सामाजिक सरोकारों पर आधारित विविध लेख, कविताएँ और रचनाएँ पाठकों को न केवल प्रेरित करती हैं, बल्कि उन्हें एक व्यापक दृष्टिकोण भी प्रदान करती हैं। मैं आशा करता हूँ कि परिसर प्रतिध्वनि की यह यात्रा निरंतर प्रगति करती रहे और यह पत्रिका आने वाले समय में राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान स्थापित करे। पुनः सम्पूर्ण टीम को इस सराहनीय प्रयास के लिए शुभकामनाएँ ...

प्रो. (डॉ.) अरविन्द अग्रवाल
वरिष्ठ सलाहकार
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

संपादकीय...

शब्दों की प्रतिध्वनि में जागता है परिसर

प्रिय पाठकों,

सप्रेम नमस्कार

हम अत्यंत हर्ष और गर्व के साथ भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' अंक 08 का स्वागत करते हैं। यह अंक केवल एक औपचारिक प्रकाशन नहीं, बल्कि हमारे शैक्षणिक, सांस्कृतिक और रचनात्मक परिवेश की जीवंत अभिव्यक्ति है- जिसमें हमारे विश्वविद्यालय परिवार के सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों और कर्मचारियों की सोच, संवेदना और सहभागिता की प्रतिध्वनि गूँजती है। पिछले अंकों की तरह यह अंक भी विचारों के संगम, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और नवाचार के बीजों का साक्षी है। हमारे परिसर में घटित विविध गतिविधियाँ, रचनात्मक लेखन, सामाजिक मुद्दों पर विचार, और कला के रंग आदि इस अंक में समाहित हैं। यह पत्रिका हम सभी को लेखन, अभिव्यक्ति और संवाद का मंच प्रदान करती है, जिससे उनमें आत्मविश्वास का संचार होता है और वे अपने विचारों को स्वर दे पाते हैं।

इस अंक की विशेषता यह है कि इसमें हमने पर्यावरण जागरूकता, नई शिक्षा नीति, महिला सशक्तिकरण, स्वतन्त्रता दिवस, राष्ट्रभक्ति और भारतीय संस्कृति में युवाओं की भूमिका जैसे विषयों पर युवाओं के दृष्टिकोण को प्रमुखता दी है। इसके साथ ही कविता, लघुकथा, चित्रांकन और संस्मरणों के माध्यम से लेखकों ने अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का अद्भुत परिचय दिया है। भित्ति पत्रिका के इस निरंतर प्रयास में हमारा उद्देश्य- **सृजन को प्रेरणा देना**, **विचारों को दिशा देना** और **संवाद की संस्कृति को प्रोत्साहित करना है।** यह केवल लेखन तक सीमित नहीं, बल्कि एक साझा मंच है जहाँ विचार बनते हैं, उभरते हैं और प्रेरणा देते हैं। अंत में, हम संपादकीय टीम, शिक्षकगणों और प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त करते हैं, जिनके सतत सहयोग से यह अंक संभव हो पाया। आशा है कि यह अंक पाठकों को विचार और भावनाओं की एक नई दिशा प्रदान करेगा और हमारे परिसर में सृजनात्मकता की परंपरा को और समृद्ध करेगा। सृजन की यह यात्रा यूँ ही जारी रहे...

नोट:

आप सभी से निवेदन है कि अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव हमें अवश्य दें, जिससे आगामी अंकों को और अधिक प्रभावशाली व उपयोगी बनाया जा सके।

डॉ. प्रेम कुमार

एसोशिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

भारत मेरी आत्मा

भारत मेरा स्वप्न है, भारत मेरी शान,
हर कोने में बसी है इसकी पहचान।
हिमालय की चोटियाँ, सागर की बाँहें,
धरती कहे- ये अमन की राहें।
गाँव की मिट्टी, शहरों का रंग,
हर भाषा में छुपा है एक अनोखा संग।
संस्कृति की धारा, पुरातन विचार,
हर पीढ़ी ने सीखा, कैसे करें सत्कार।
ताज की चमक हो या खेतों की हरियाली,
भारत सजीव है- सच्चाई और सादगी वाली।
धर्मों का संगम, परंपरा की छाया,
हर दिल में बसा है, प्रेम का साया।
नदियों की कल-कल, मंदिरों की घंटी,
संगीत में बहती है जीवन की मस्ती।
वीरों की भूमि, बलिदान की कहानी,
हर युग में उठी है आज़ादी की रवानी।
चलो फिर से मिलकर व्रत ये उठाएँ,
भारत को फिर से स्वर्ग बनाएँ।
जहाँ हर बच्चा मुस्कराए गर्व से,
'मैं हूँ भारतवासी' कहे ज़ोर से।

- डॉ. भाग्यश्री खरे

वो लड़का

वो लड़का...

अब आए दिन

रेस्टोरेंट में खाना नहीं खाता,

घर से टिफिन लेकर जाता है।

10 रुपए बच जाएंगे

सोच कर,ऑटो छोड़..

पैदल ही बस स्टैंड तक जाता है।

महीने पर कुछ हजार रुपए

ज्यादा मिल जाएं ,

इस खातिर ...

ऑफिस में खुद ही

ओवरटाइम की जुगत भिड़ाता है।

दुकान पर अपनी

पसंदीदा रंग की शर्ट को देख,

अभी तो यह शर्ट ...

इस साल और चल जाएगी,

अपनी पहनी शर्ट पर हाथ फिराता है।

अखबार में खेल कूद के पृष्ठ की बजाय ....

एल आई सी,म्युचुअल फंड, बचत योजनाओं की स्कीमों पर नजर गढ़ाता है

अपने लड़कपन को कहीं

नींव में दबाकर,

नींद में भी किसी के भविष्य की नीड़ बनाता है।

वो लड़का

हाँ ...

वही कल का लड़का

जब किसी का पिता बन जाता है

अंजलि खरे

किताबें: ज्ञान का अद्भुत संग्रह

किताबें एक अद्भुत खजाना हैं, जो हमें नए विश्व की खोज में ले जाती हैं। ये न केवल हमारे जीवन को रंगीन बनाकर और संवारती हैं, बल्कि हमें विश्व के हर घटक के बारे में जानकारी भी प्रदान करती हैं। किताबों का प्रत्येक पन्ना एक नया सफर है, एक नया उत्साह और एक नई सोच का परिचय। जहाँ अक्षर हमें नई दुनिया के दरवाज़े खोलते हैं, वहीं शब्द हमें अज्ञात अन्धकार से बाहर लाकर प्रकाश में ले जाते हैं। किताबें हमें संवाद का माध्यम भी प्रदान करती हैं, जैसे ही हम किसी किताब के पन्नों को पलटते हैं, हम संवाद में सामाहित हो जाते हैं, जिससे हमारा मन विश्व के विभिन्न विचारों और धारणाओं के साथ विस्तृत होता है।

किताबें हमें न केवल ज्ञान का संग्रह प्रदान करती हैं, बल्कि वे हमें संवाद के एक महत्वपूर्ण और रोचक साधन के रूप में भी देखी जा सकती हैं इसलिए किताबें न सिर्फ हमारे जीवन को संवारती हैं, बल्कि हमें एक उत्कृष्ट और विचारशील व्यक्तित्व बनाने में भी मदद करती हैं।

सोनिया गौड़
चीफ लाइब्रेरियन
यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर

माटी से मोहब्बत

जिस मिट्टी में भगत सिंह, चंद्रशेखर

और सुभाष का खून मिला हो

उस धरती पर जन्म लेना ही सबसे बड़ा सौभाग्य है।

वो मोहब्बत भी क्या कमाल की रही होगी

जिसका रांझा भगत सिंह

और हीर आज़ादी रही होगी।

मेरे जज़्बातों से इस क़दर वाक़िफ़ हूँ

मेरी क़लम से इश्क़ भी लिखना चाहूं तो इंकलाब लिख जाता है।

वो मोहब्बत ही क्या जो देश की मिट्टी से न हुई

श्री कृष्ण की नीति और भगत सिंह की जवानी...

दोनों ही सिखाते हैं... इश्क वही जो बलिदानी।

स्वतंत्रता दिवस के इस पावन अवसर पर

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी के

माननीय प्रबंधन, समर्पित स्टाफ एवं ऊर्जावान विद्यार्थियों को

दिल से हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाइयाँ !जय हिंद

सुनीता जाट
रिसेप्शनिस्ट
यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर

गर्भस्थ बालिका की माँ से करुणामयी पुकार

(एक भावनात्मक कविता)

माँ! मैं तेरे अंश से पनपती,
धड़कनों में तेरे बसती,
अभी तो जीवन का आरंभ है मेरा,
फिर क्यों बन गई हूँ मैं बोझ तेरा?
तेरे गर्भ में पल रही हूँ चुपचाप,
ना रोई, ना माँगी मैंने कोई जवाब,
फिर क्यों तेरे मन में उठते हैं संशय,
क्या मैं बेटी हूँ, बस इसी बात पे भय?
माँ, सुन मेरी यह करुण पुकार,
मैं भी चाहती हूँ देखना यह संसार।
तेरे आंचल की छांव में खेलूं,
तेरे कंधे से लगकर सपने बुनूं।
मैं भी मुस्कान बन सकती हूँ,
तेरे जीवन की जान बन सकती हूँ,
मुझे मत छीन मेरे होने का हक,
मैं भी किसी दिन बनूंगी तेरा अभिमान और तेरा पक्ष।
क्यों बेटी होना बन गया अपराध?
क्या स्त्री का ही नहीं तूने लिया आकार?
मैं भी बन सकती हूँ लक्ष्मी, सरस्वती, रानी,
कभी मीरा, कभी झांसी की वीरानी।
माँ, बस एक बार मुझे जीवन दे,
अपनी ममता की बाहों में ठिकाना दे।
तेरी आंखों की चमक बनूंगी,
तेरे सपनों की उड़ान बनूंगी।
न मार मुझे, मैं भी एक जीवन हूँ,
तेरी कोख की पूनम की किरन हूँ।
सिर्फ बेटी नहीं, मैं तेरा भविष्य हूँ,
माँ! मुझे जन्म दे, मैं तेरा गर्व बन जाऊंगी।

डॉ. सीताराम माली
एसोशिएट प्रोफ़ेसर, राजनीति विज्ञान

अटूट हौसला

(वरिष्ठ आईएएस अधिकारी इरा सिंघल की संघर्षगाथा)

भारत की प्रशासनिक सेवाओं की दुनिया में, जहाँ कठिन परिश्रम, समर्पण और संकल्प ही सफलता की कुंजी हैं, वहाँ इरा सिंघल की कहानी एक प्रेरणादायक मिसाल है- खासकर उन सभी के लिए जो किसी न किसी रूप में दिव्यांगता से जूझ रहे हैं। इरा सिंघल का जन्म स्कोलियोसिस (Scoliosis) नामक रीढ़ की हड्डी से जुड़ी एक दुर्लभ बीमारी के साथ हुआ था, जिससे उनके दोनों हाथों की गति प्रभावित थी। लेकिन इस शारीरिक चुनौती ने कभी भी उनके सपनों को बाँध नहीं पाया। उन्होंने कंप्यूटर इंजीनियरिंग और दिल्ली विश्वविद्यालय से एमबीए की पढ़ाई पूरी की। वे पढ़ाई में शुरू से ही अव्वल रहीं और उनकी सोच हमेशा ऊँची उड़ान भरती रही।

साल 2010 में इरा ने भारतीय सिविल सेवा परीक्षा (UPSC) पास कर ली, जो देश की सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक मानी जाती है। लेकिन जब नियुक्ति की बारी आई, तो उन्हें केवल उनकी दिव्यांगता के कारण सेवा में शामिल होने से मना कर दिया गया। अधिकतर लोग इस अस्वीकार को अंत मान लेते, लेकिन इरा ने इसे अपनी लड़ाई की शुरुआत बनाया। उन्होंने न्यायालय का सहारा लिया और इस अन्याय के खिलाफ एक कानूनी लड़ाई छेड़ दी। यह सिर्फ उनकी व्यक्तिगत लड़ाई नहीं थी, बल्कि उन लाखों दिव्यांग व्यक्तियों की आवाज़ थी जो समान अवसर के अधिकारी हैं। चार साल तक चली कानूनी लड़ाई के बाद, इरा ने 2014 में दोबारा UPSC परीक्षा दी – और इस बार पूरे भारत में जनरल श्रेणी में टॉप कर दिखाया। यह उपलब्धि पूरे देश के लिए एक चौंकाने वाला और गर्व का क्षण था।

आज इरा सिंघल एक वरिष्ठ आईएएस अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं और समाज में समावेशिता, शिक्षा और दिव्यांग अधिकारों के लिए लगातार कार्य कर रही हैं। उनकी सफलता इस बात का प्रमाण है कि असली ताकत शरीर में नहीं, बल्कि मानव की सोच और आत्मबल में होती है। इरा सिंघल की कहानी सिर्फ एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि हर उस इंसान की उम्मीद है जो किसी भी चुनौती के बावजूद अपने सपनों को साकार करना चाहता है। दुनिया ने उन्हें सीमित करना चाहा, पर उन्होंने हर दीवार को तोड़कर खुद की पहचान बनाई।

श्री हसन दीन खान
एसिस्टेंट प्रोफ़ेसर, विशेष शिक्षा विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर

नारी: शक्ति से सशक्ति तक का सफर

1. भूमिका (प्रस्तावना)

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:"
(जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं।)
भारतीय संस्कृति में नारी को 'शक्ति' का प्रतीक माना गया है। वह माँ दुर्गा के रूप में उग्र है तो माँ अन्नपूर्णा के रूप में करुणामयी। परंतु युगों से सामाजिक बेड़ियों में बंधी नारी आज "सशक्त" बनकर खड़ी हो रही है।

2. साहित्य में नारी: प्रेरणादायक स्वर
(कवयित्री: सुभद्राकुमारी चौहान)
"खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।"
यह पंक्ति केवल रानी लक्ष्मीबाई के लिए नहीं, आज की हर साहसी नारी के लिए है।

"मैं नीर भरी दुख की बदली"- महादेवी वर्मा
इस कविता में नारी के भीतर के संघर्ष, प्रेम और पीड़ा की गहराई है।

3. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

- नारी को प्राचीन काल में आदरणीय स्थान प्राप्त था – जैसे गार्गी, अपाला, मैत्रेयी आदि।
- मध्यकाल में सामाजिक बंधनों में जकड़ी।
- 19वीं सदी में सुधार आंदोलन (राजा राममोहन राय, सावित्रीबाई फुले) ने जागृति लाई।

4. संवैधानिक अधिकार

अनुच्छेद	अधिकार
14	कानून के समक्ष समानता
15(3)	महिलाओं के लिए विशेष प्रावधान
16	रोजगार में समान अवसर
21	गरिमा से जीने का अधिकार
39(d)	समान वेतन का अधिकार

5. विधिक सुरक्षा (BNS, 2023 अनुसार)

BNS धारा	विषय	पूर्व IPC धारा
63	छेड़खानी	354
64	यौन उत्पीड़न	354A
65	पीछा करना	354D
66	कपड़े फाड़ने की कोशिश	354B
69–74	बलात्कार संबंधी धाराएं	375–376
85	दहेज मृत्यु	304B
86(2)	घरेलू हिंसा/क्रूरता	498A

6. राजनीति में भागीदारी

- महिला आरक्षण विधेयक 2023 (33%)
- पंचायतों में 14 लाख+ महिला प्रतिनिधि
- राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार जैसे उदाहरण

7. आर्थिक और शैक्षिक सशक्तिकरण

- मुद्रा योजना, स्वयं सहायता समूह
- "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" योजना
- साक्षरता से आत्मनिर्भरता का रास्ता

8. प्रेरणास्रोत महिलाएं

- कल्पना चावला (अंतरिक्ष)
- किरण बेदी (प्रथम महिला IPS)
- पी.वी. सिंधु (खेल जगत)
- सुधा मूर्ति (लेखिका, समाजसेविका)

9. अब भी हैं चुनौतियाँ

- कार्यस्थल पर असमान वेतन
- घरेलू हिंसा
- बालिकाओं की शिक्षा में गिरावट
- मानसिकता परिवर्तन की आवश्यकता

श्री राजनारायण शर्मा
प्रोफेसर, विधि विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर ने मनाया विकसित भारत: युवा कनेक्ट कार्यक्रम

भारत सरकार की 'विकसित भारत- युवा कनेक्ट' पहल के अंतर्गत युवा दिवस के अवसर पर ग्राम तीतरिया में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य युवाओं को सरकार की योजनाओं से जोड़ना, उनके विचारों को सुनना और उन्हें देश के विकास में भागीदार बनाना रहा। कार्यक्रम का संचालन 'विकसित भारत' की संयोजक एवं नोडल अधिकारी प्रो. (डॉ.) मोनिका शर्मा के नेतृत्व में किया गया, जबकि अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ. रश्मि जैन द्वारा की गई। कार्यक्रम के दौरान ग्रामवासियों और स्थानीय युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। तीतरिया ग्राम की सरपंच श्रीमती पार्वती शर्मा ने समस्त अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया। पैनल चर्चा के अंतर्गत प्रो. अरविंद अग्रवाल ने युवाओं की ऊर्जा, सोच और नवाचार क्षमता पर विशेष बल दिया और बताया कि सही दिशा में प्रयुक्त युवा शक्ति भारत को एक विकसित राष्ट्र बना सकती है। प्रो. एस. एस. यादव ने कृषि और ग्रामीण विकास की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए युवाओं को स्मार्ट एग्रीकल्चर से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ. सीताराम माली और डॉ. महादेव सैनी ने योग और सामाजिक सेवा के माध्यम से युवाओं में चरित्र निर्माण के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि शारीरिक, मानसिक और सामाजिक संतुलन ही राष्ट्र निर्माण की नींव है। कुलपति डॉ. रश्मि जैन ने डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, और राष्ट्रीय शिक्षा नीति जैसी भारत सरकार की प्रमुख पहलों की जानकारी दी और युवाओं से इन योजनाओं में सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया। यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के कुलाधिपति डॉ. अंशु सुराना जी का वक्तव्य अत्यंत प्रेरणादायक रहा, जिसमें उन्होंने युवाओं को व्यक्तिगत उत्थान के साथ-साथ राष्ट्रहित में संतुलन साधने की प्रेरणा दी। रजिस्ट्रार महोदय ने कार्यक्रम को पूर्ण प्रशासनिक सहयोग प्रदान किया, वहीं डॉ. प्रेम कुमार, श्री सुरेंद्र शर्मा एवं श्री हसन दीन खान ने युवाओं को पंचायती राज व्यवस्था और स्थानीय शासन से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे ग्रामीण युवाओं की सहभागिता और सशक्तिकरण को बल मिला। इनकी सक्रिय भागीदारी से युवाओं में लोकतांत्रिक प्रक्रिया की समझ बढ़ी और उन्होंने स्थानीय स्तर पर नेतृत्व और भागीदारी की महत्ता को महसूस किया। इस विशेष आयोजन में डॉ. रजनी माथुर द्वारा शपथ ग्रहण समारोह की पहल की गई, जिसमें उपस्थित सभी युवाओं ने राष्ट्र निर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्व और सकारात्मक योगदान की शपथ ली। यह क्षण कार्यक्रम का एक अत्यंत प्रेरक और भावनात्मक भाग रहा, जिसने युवाओं में नई ऊर्जा और प्रतिबद्धता का संचार किया। अंततः 'विकसित भारत- युवा कनेक्ट' कार्यक्रम ग्राम तीतरिया में ग्रामीण एवं शहरी युवाओं के बीच संवाद और सहयोग का सेतु बना तथा राष्ट्र निर्माण में युवा शक्ति की भूमिका को और सुदृढ़ करने में सफल रहा।

Bridging the Gap: Advancing Special Education for Students with Autism Spectrum Disorder

Abstract

Autism Spectrum Disorder (ASD) presents unique challenges and opportunities within special education, where systemic gaps often hinder equitable access to effective learning environments. This paper examines barriers to quality education for students with ASD and proposes evidence-based strategies to advance inclusive practices. Through a systematic literature review of peer-reviewed studies from 2010 to 2025, we identify key challenges, including inadequate teacher training, inconsistent implementation of evidence-based interventions, and disparities in resource allocation across socioeconomic contexts. Findings highlight the efficacy of structured interventions such as Applied Behavior Analysis (ABA), Picture Exchange Communication System (PECS), and Universal Design for Learning (UDL) in improving academic and social outcomes for students with ASD. However, their application remains uneven, particularly in underserved communities. The study also underscores the importance of neurodiversity-informed practices and family involvement in fostering student success. Recommendations include enhanced professional development for educators, increased funding for specialized resources, and policy reforms to ensure consistent implementation of inclusive education frameworks. By addressing these gaps, schools can create environments that support the diverse needs of students with ASD, promoting both academic achievement and social inclusion. This paper contributes to the discourse on special education by offering a comprehensive framework for aligning research, policy, and practice to bridge existing disparities. Future research should focus on longitudinal outcomes of inclusive education and culturally responsive interventions to further advance equity for students with ASD.

Keywords: Autism Spectrum Disorder, special education, inclusive education, evidence-based practices, neurodiversity, individualized education programs.

Manish Kumar Meena

Assistant Professor

University of Technology, Jaipur

यूनिवर्सिटी आफ टेक्नालाजी में एंटी रैगिंग सप्ताह 12-18 अगस्त 2025 भव्य आगाज़

12-18 अगस्त 2025 का शुभारंभ गरिमामय माहोल में किया गया। कार्यक्रम की शुरुभात सभी विभागो के विभागाध्यक्षों द्वारा दीप प्रज्जवलन से हुई जिसके बाद स्वागत भाषण एवं प्रेरणादायक संबोधन प्रति-कुलपति प्रो. अंकित गांधी ने दिया, अपने सम्बोधन में उन्होंने कहा- रैगिंग जैसी कुप्रथा शिक्षा और मानवता दोनों के लिये घातक है। कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा ने विद्यार्थियो को रैगिंग के बाद उनके कानूनी अधिकारों की जानकारी उपलब्ध कराई। विश्वविद्यालय के कुलाध्यक्ष डॉ. अंशु सुराना ने रैगिंग मुक्त वातावरण बनाने का संदेश देते हुए आपसी सम्मान और सौहार्द्र की भावना बनाये रखने आह्वान किया। विश्वविद्यालय के समस्त कर्मचारियों व विद्यार्थियों ने रैगिंग के खिलाफ शपथ ली।

कार्यक्रम का संचालन एंटी-रैगिंग समिति की सहसंयोजक प्रोफ़ेसर रननी माथुर द्वारा किया गया इस मौके पर प्रो. एस. एस. यादव, डॉ. सीता राम माली, डॉ. प्रेम कुमार, डॉ. महादेव सैनी, श्री सुरेन्द्र शर्मा, श्री हसन दीन खान, श्री यश यादव, चारू दुबे, मनीषा यादव आदि ने अपने विचारों द्वारा संस्थान में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण को बढ़ावा देने को प्रेरित किया प्रो. रजनी माथुर ने सप्ताह ने दौरान कराई जाने वाली गतिविधियो की जानकारी उपलब्ध कराई।

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, वाटिका, जयपुर में सघन पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन

माननीय कुलपति महोदया प्रोफ़ेसर (डॉ.) रश्मि जैन के निर्देशन में वाटिका जयपुर स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, वाटिका, जयपुर परिसर में एम. एल. मेहता मेमोरियल फाउंडेशन के सहयोग से सघन पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी विभागों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी की और परिसर के विभिन्न हिस्सों में 100 से अधिक पौधों का रोपण किया गया। कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कुलपति प्रोफ़ेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने कहा कि "पर्यावरण संरक्षण और हरित परिसर का निर्माण हमारी प्राथमिकता है। वृक्ष न केवल ऑक्सीजन का स्रोत हैं, बल्कि वे हमारी धरती के संतुलन और जीवन के आधार भी हैं।" उप-कुलपति डॉ. अंकित गांधी ने भी पर्यावरण संरक्षण एवं पौधारोपण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि "वृक्ष हमारी जीवनरेखा हैं, इनका संरक्षण हमारे अस्तित्व की रक्षा है। हरित परिसर का निर्माण न केवल सौंदर्य बढ़ाता है, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित करता है।"

विश्वविद्यालय के वाइस चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने संदेश देते हुए कहा कि "पौधारोपण केवल एक दिन का कार्य नहीं, बल्कि यह प्रकृति के प्रति हमारी दीर्घकालिक जिम्मेदारी है। हर पौधा जो हम लगाते हैं, आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य उपहार है।" कार्यक्रम में सभी विभागों के डीन, शिक्षकगण, कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा, उपकुलसचिव इंजी. नरेश अरोड़ा, परीक्षा नियंत्रक डॉ. कमल किशोर जांगिड़, खेल निदेशक श्री यश यादव एवं एडमिशन प्रभारी श्री राहुल विजय समेत अन्य प्रशासनिक अधिकारी भी उपस्थित रहे।

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में 79वां स्वतंत्रता दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, वाटिका, जयपुर में 79वां स्वतंत्रता दिवस समारोह परंपरागत उत्साह, उल्लास और गहरी देशभक्ति के साथ मनाया गया। विश्वविद्यालय परिसर में ध्वजारोहण के पश्चात राष्ट्रगान गाया गया और तिरंगे को सलामी दी गई। समारोह के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के चेयरमैन डॉ. प्रेम सुराना एवं विशिष्ट अतिथि एडवोकेट रमाकांत शर्मा राजस्थान हाईकोर्ट, जयपुर रहे। इस अवसर पर माननीय उपकुलपति डॉ. अंकित गांधी ने अपने प्रेरणादायक संबोधन में स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए युवाओं से उनके साहस और समर्पण से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। उन्होंने आज़ादी के बाद भारत द्वारा विज्ञान, शिक्षा, तकनीक और आर्थिक क्षेत्रों में हासिल की गई उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों से देश को वैश्विक मंच पर अग्रणी बनाने हेतु सक्रिय भागीदारी निभाने की अपील की।

उपकुलपति डॉ. अंकित गांधी ने यह भी उल्लेख किया कि विश्वविद्यालय में स्वतंत्रता दिवस के साथ-साथ 12 से 18 अगस्त तक ‘एंटी-रैगिंग सप्ताह’ का आयोजन किया जा रहा है, जिसके अंतर्गत रैगिंग के विरुद्ध जागरूकता फैलाने के लिए विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं। उन्होंने छात्रों से अपील की कि वे रैगिंग जैसी सामाजिक बुराई से दूर रहकर एक सहयोगी, सुरक्षित और समावेशी शैक्षणिक वातावरण के निर्माण में अपना योगदान दें। जागरूकता अभियान के अंतर्गत विद्यार्थियों द्वारा ‘एंटी-रैगिंग सेल्फी कॉर्नर’ पर उत्साहपूर्वक सेल्फी भी ली गई, जिससे रचनात्मक एवं प्रभावी तरीके से रैगिंग विरोधी संदेश को प्रसारित किया गया। कार्यक्रम के दौरान विविध प्रस्तुतियाँ आयोजित की गईं, जिन्होंने छात्रों, संकाय एवं स्टाफ के बीच राष्ट्रप्रेम और एकता की भावना को और प्रबल किया।

विशिष्ट अतिथि एडवोकेट श्री रमाकांत शर्मा ने स्वतंत्रता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज का भारत युवाओं के संकल्प, अनुशासन और सकारात्मक सोच के बल पर ही नई ऊँचाइयों को प्राप्त कर सकता है। उन्होंने छात्रों से आग्रह किया कि वे अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों के प्रति भी समान रूप से सजग रहें और राष्ट्र की प्रगति में सक्रिय योगदान दें। चेयरमैन डॉ. प्रेम सुराना ने अपने प्रेरक संबोधन में कहा कि स्वतंत्रता केवल एक अधिकार नहीं, बल्कि यह एक गहरी जिम्मेदारी भी है, जिसे हमें आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित और सशक्त बनाना है। उन्होंने जोर देकर कहा कि अखंडता, उत्तरदायित्व और नैतिकता जैसे मूल्यों को जीवन में आत्मसात करना ही एक सशक्त राष्ट्र की नींव है।

डॉ. प्रेम सुराना ने छात्रों से आह्वान किया कि वे अपने ज्ञान, कौशल और नवाचार की शक्ति को समाज के कल्याण एवं देश के सतत विकास की दिशा में लगाएँ। उन्होंने यह भी कहा कि बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारतीय युवाओं को नेतृत्व, सहयोग और रचनात्मक सोच के माध्यम से विश्व मंच पर भारत की पहचान को और सशक्त बनाना होगा। समारोह की एक विशेष पहल के तहत चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों एवं सुरक्षाकर्मियों के माध्यम से पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिससे पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता भी प्रकट हुई। समारोह का समापन विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक डॉ. कमल किशोर जांगिड़ द्वारा समस्त स्टाफ मेंबर्स हेतु प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसके उपरांत "भारत माता की जय" के नारों ने वातावरण को देशभक्ति से ओतप्रोत कर दिया।

आईआईटी दिल्ली के अंतर्गत यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर को वर्चुअल लैब्स के लिए नोडल केंद्र के रूप में नामित किया गया

आईआईटी दिल्ली के अंतर्गत यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर को वर्चुअल लैब्स के लिए नोडल केंद्र के रूप में नामित किया गया इसके लिए डॉ. सागर कुमार को संस्थान नोडल समन्वयक (आईएनसी) नियुक्त किया गया है। इस पहल के तहत, छात्रों को निःशुल्क वर्चुअल लैब्स की सुविधा प्रदान की जाएगी, जिसमें व्यावहारिक प्रयोग और सिमुलेशन-आधारित शिक्षा का लाभ उठाया जा सकता है। इससे जटिल अवधारणाओं की समझ और धारणा में सुधार होगा। कुलपति डॉ. रश्मि जैन ने कहा- "यह हमारे विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात है।" इस महत्वपूर्ण अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. अंशु सुराणा ने कहा- "इस पहल से छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और प्रयोगात्मक अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। वर्चुअल लैब्स को दूरस्थ रूप से एक्सेस किया जा सकता है, जिससे छात्रों के लिए कहीं से भी सीखना और प्रयोग करना आसान हो जाएगा।"

सिंजारा-तीज में सजी परंपरा लहरिया पहनकर मनाया उत्सव

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी जयपुर में सिंजारा-तीज फेस्टिव पार्टी का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य हमारी भारतीय परंपरा एवं संस्कृति को उत्साहपूर्वक मनाने के लिए प्रोत्साहित करना रहा। बेसिक एंड एप्लाईड साइंस की अधिष्ठाता व आईक्यूएसी प्रभारी डॉ. रजनी माथुर ने बताया कि इस अवसर पर विश्वविद्यालय में कार्यरत सभी महिलाएँ फ़्यूजन लहरिया आउटफिट्स में सज कर पहुँचीं।

कुलगुरू(प्रेसीडेंट) प्रोफ़ेसर(डॉ.) रश्मि जैन ने ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों को करवाने की प्रासंगिकता और महत्व पर प्रकाश डाला। इस महत्वपूर्ण संस्कृतिक कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा, डॉ. प्रेम कुमार, श्री नरेश अरोड़ा, डॉ. सीताराम माली, डॉ. जितेन्द्र चौधरी, श्री हसन दीन खान, श्री धीरज नागर आदि विश्वविद्यालय सदस्यों ने कार्यक्रम में सहयोग किया।